एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (अप्रैल, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

भारत में किसानों की आत्महत्या और इसके कारण

डॉ. हरकेश कुमार बलाई[1], *अमन इंदौरा[2], आयुष जैन[2] एवं आदिश जैन[2]
[1]सहायक प्राध्यापक कृषि संकाय, जगन्नाथ विश्विद्यालय, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2]विद्यार्थी, कृषि संकाय, जगन्नाथ विश्विद्यालय, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: amanindora564@gmail.com

भारत एक कृषि देश है। जहां पर लगभग 60% आबादी किसी ना किसी रूप में कृषि पर निर्भर है। कृषि भारत में अर्थव्यवस्था को दर्शाती है, फिर भी देश के किसान एक गहरे आर्थिक और समाजिक संकट का सामना कर रहे है। बीते कुछ समय में भारतीय किसानों की आत्महत्या की घटनाएं एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या बनी हुई है। इसका कारण केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह एक जटिल सामाजिक आर्थिक समस्या है, इसमें कर्ज फसल की असफलता, बाजार की अस्थिरता, जलवायु परिवर्तन और सरकारी योजना का सही ज्ञान ना होना भी आर्थिक कारण है। इस लेख में, भारत में किसानों की आत्महत्या दर और उसके प्रमुख आर्थिक कारणों पर विस्तार से चर्चा की गई है, क्योंकि समस्या की गहराई को समझा जा सके और समाधान का सोच विचार कर सके।

किसानों की आत्महत्या दर और आर्थिक कारण

भारत में किसानों की आत्महत्या दर

- राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के हिसाब से, बीते कुछ दिनों में अनके किसानों के आत्महत्या का कारण बन चुका है।
- साल 2022 के आंकड़ों के अनुसार लगभग 11,290 किसानों और कृषि से जुड़े व्यक्तियों ने आत्महत्या की।
- हमारे भारत देश में लगभग आत्महत्याओं में से किसानों की आत्महत्या का दर 7% है।
- आत्महत्या करने वाले किसानों में अधिकांश छोटे वर्ग और सीमित कृषि भूमि है। इसमें उनका अकड़ा भारी रूप से है।

आर्थिक कारण

1. ऋण भार और ऋण जंजाल: भारतीय किसानों का आत्महत्या करने का सबसे बड़ा भार ऋण है। (जैसे - छोटे किसान अपनी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए बड़े जमींदारों से अधिक दर पर कर्ज लेना पड़ता है।)
सरकारी और निजी संस्थान से ऋण न मिलने पर उन्हें मजबूरन साहूकारों से अधिक दर पे ऋण लेना पड़ता है। जिसके वजह से आत्महत्या के दर में बढ़ोतरी हो रही है।

2. फसल खराब होना और प्राकृतिक समस्या: भारतीय कृषि में मानसून की अहम भूमिका है। सुखा, बाढ़, ओलावृष्टि और जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों का नुकसान होता है, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।
सरकार द्वारा फसल बीमा मौजूद है, लेकिन उनका लाभ समय पर नहीं मिल पाता।

3. उत्पादन का कम दाम मिलना: उत्पादन का सही मूल्य न मिलने के कारण उन्हें कई बार, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थ मूल्य (MSP) भी प्राप्त नहीं होता। बाजार में मौजूद बिचौलियों और अन्य स्थितियों के कारण किसान अपनी फसल कम दामों में बेचने पर मजबूर हो जाते है, इस कारण उन्हें उनकी लागत भी प्राप्त नहीं हो पाती।

4. बढ़ती लागत और आया कि कमी: खेतों में होने वाली लागत जैसे बीज, खाद, कीटनाशक, बिजली, डीजल आदि का भी खर्चा नहीं निकल पाता। बढ़ती लागत किसानों की आया मै वृद्धि का मुख्य कारण है। यह कारण उसके आर्थिक संकट को और गहरा कर देती है।

5. छोटे और सीमांत किसान: भारत में लगभग 85% किसान छोटे और सीमांत वर्ग के है जिनके के पास कुल 2 हैक्टेयर से कम भूमि कम होने के कारण आधुनिक तकनीक अपनाने जोखिम प्रबंधन करने या सीधे रूप से बाजार से नहीं जुड़ सकते, इसका उनके आया पर प्रभाव पड़ता है ।

6. सरकारी योजनाएं और उनका क्रियान्वयन: कृषि कर्ज माफी, बीमा, सबसिडी और अन्य योजनाएं भले ही सरकार द्वारा निर्मित है परन्तु किसानों को उनका ज्ञान न होने के कारण उनका कोई उपयोग नहीं है, और वो उनके लाभ नहीं उठा पाते है, इसका मुख्य कारण भ्रष्टाचार और उनकी अज्ञानता है।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) report 2022
2. भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्थान (ISARI)
3. नीति आयोग – कृषि एवं किसान कल्याण रिपोर्ट्स
4. भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) – कृषि ऋण पर रिपोर्ट्स
5. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)